International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

Original Article

हिंदी साहित्य के संदर्भ: कृत्रिम बुद्धिमता का बहुआयामी दृष्टीकोन

प्रा. हुपरीकर सुशील अशोक

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

चंद्राबाई – शांताप्पा शेंडूरे कॉलेज,हुपरी

Manuscript ID: IJAAR-130346
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 3
January – February 2026
Pp. 254 - 258

Submitted: 15 Jan.2026
Revised: 20 Jan. 2026
Accepted: 30 Jan. 2026
Published: 10 Feb. 2026

Corresponding Author:
प्रा. हुपरीकर सुशील अशोक

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.18538221

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.18538221

सारांश:

आज सूचना प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी क्रांति के कृत्रिम बुद्धिमत्ता *Artificial intelligence (AI)*ने समाज के हर क्षेत्र पर अपनी साख बना ली है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से तात्पर्य संगणक विज्ञान की शाखा से है। जो सॉफ्टवेयर और मिशनों को मानवीय बौद्धिक क्षमताओं की तरह सोचने, समझने तथा विश्लेषण करने और सृजन करने की क्षमता प्रदान करता है। कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य और भाषा को नए रूप नए सार से प्रस्तुत कर रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संबंधित ऐप्स है जो प्रति लेखन, संवादो द्वारा जवाब, अनुवाद अन्य जानकारी देने में सहायता करते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता AI के माध्यम से आज चैट जीपीटी के माध्यम से हिंदी कहानी, कविता, उपन्यास,नाटक निबंध तथा शोध निबंध लेख आदि का प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण के माध्यम से मानवीय बौद्धिक भाषा की तरह साधन या साहित्य उपलब्ध कर रहे हैं। परिणामस्वरुप हिंदी भाषा के लिए नवीनतम रास्ते खुल रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता या ए. आई. के माध्यम से अनुवाद करना आसान हो रहा है। जिससे हिंदी साहित्य का भारत सहित विश्व की अन्य भाषाओं में अनुवाद हो रहा है इसी उपलब्धी में अनुवाद के कारण हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहा है। जिससे हिंदी साहित्य को विश्व पटल मिल रहा है। आज ए.आई.टूल्स की तकनीकी सहायता से हिंदी साहित्य ब्रॉडकास्ट तथा ऑडियो के रूप में अनेक श्रोताओं तथा पाठकों तक पहुंच रहा है।

शब्दकुंज: हिंदी भाषा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हिंदी साहित्य, अनुवाद, आलोचना, रचनात्मक लेखन, साहित्य शोध, सॉफ्टवेयर, डिजिटल शिक्षा, ट्रांसलेशन टूल, मिशन आदि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

Creative Commons

How to cite this article:
प्रा. हुपरीकर सुशील अशोक. (2026). हिंदी साहित्य के संदर्भ: कृत्रिम बुद्धिमता का बहुआयामी दृष्टीकोन. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 254–258. https://doi.org/10.5281/zenodo.18538221

OPEN ACCESS

प्रस्तावना:

इक्कीसवीं सदी के सूचना प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी क्रांति के इस युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता Artificial intelligence (AI)ने शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, व्यापार तथा कृषि आदि समाज के हर क्षेत्र पर अपनी साख बना ली है। साहित्य और भाषा भी इसे अछूत नहीं है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनने जा रहा है। ऐसा कहा जाए तो गलत नहीं होगा कृत्रिम बुद्धिमत्ता से तात्पर्य संगणक विज्ञान की शाखा से है। जो सॉफ्टवेयर और मिशनों को मानवीय बौद्धिक क्षमताओं की तरह सोचने, समझने तथा विश्लेषण करने और सृजन करने की क्षमता प्रदान करता है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हिंदी भाषा और साहित्य को सरल, प्रभावी और सुलभ बना विश्व पटल पर नए रूप से प्रस्तुत कर रहा है। मशीन लर्निंग, वॉइस असिस्टेंट, डीप लर्निंग, ऑटोमेटिक ट्रांसलेशन, प्राकृतिक भाषा, प्रसंस्करण, कंप्यूटर विजन से लेकर भाषा सुनकर वर्ड फाईल में रुपांतरण एप्लीकेशन तक आदि का हिंदी भाषा तथा साहित्य में तेजी से उपयोग हो रहा है। जिससे हिंदी साहित्य के विभिन्न विधाओं जैसे उपन्यास, कहानी, कविता तथा नाटक आदि के अध्ययन को सुलभ और सहज बना दिया है। जिस कारण उनका अध्ययन और उससे संबंधित जानकारी प्राप्त करना आसान बन गया है। फिर भी कुछ संभावनाएं और चुनौतियां निर्माण हो रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से हिंदी में रोजगार के अवसर खुल रहे हैं। इस नई तकनीक ने हिंदी साहित्य के उपयोग को सरल ही नहीं तो इस डिजिटल दौर में उसे बेहतरीन समन्वय के योग्य बना रही है। जो हिंदी भाषा और साहित्य के विकास और प्रचार-प्रसार में योगदान बन रही है। जो हिंदी की एक नई वैश्विक पहचान दिलाने में सहायक सिद्ध होगी।

शब्दकुंज : हिंदी भाषा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हिंदी साहित्य, अनुवाद, आलोचना, रचनात्मक लेखन, साहित्य शोध, सॉफ्टवेयर, डिजिटल शिक्षा, ट्रांसलेशन टूल, मिशन आदि।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थ और स्वरूप:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अंग्रेजी के artificial intelligence का हिंदी रूपांतरण है। Artificial Intelligence का संक्षिप्त रूप AI है। प्राकृतिक न होकर जो मानव निर्मित है उसे कृत्रिम कहते हैं। बुद्धिमता का अर्थ है मनुष्य की ऐसी मानसिक क्षमता जो सोचने, समझने और समस्याओं को हल करने में सहायता करती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संबंध में विजय नगरकर कहते हैं कि "कृत्रिम बुद्धि एक तकनीक है जिसमें कंप्यूटर या अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का उपयोग बौद्धिक कार्यों के लिए किया जाता है।"[1] विकिपीडिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंध में कहा गया है कि "AI याने Artificial Intelligence (कृत्रिम बुद्धिमता) एक ऐसी तकनीक है जिसमें मिशिनों और कंप्यूटर सिस्टम को मानव की तरह सोचने समझने और निर्णय लेने की क्षमता दी जाती है।"[2] इस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में मेरी धारणा है कि मानव की तरह सोच समझकर निर्णय लेकर जो बौद्धिक कार्यसंगणक अथवा इलेक्ट्रॉनिक उपकरण द्वारा किया जाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से तात्पर्य संगणक विज्ञान की शाखा से है। जो सॉफ्टवेयर और मिशनों को मानवीय बौद्धिक ही क्षमताओं की तरह सोचने, समझने तथा विश्लेषण करने और सृजन करने की क्षमता प्रदान करता है।

हिंदी साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता:

भाषा साहित्य के अभिव्यक्ति का माध्यम है। वह लिखित या मौखिक रूप में विचारों को प्रस्तुत करता है। ज्ञान की एक नई विधा के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता विश्व पटल पर

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

विराजमान हो रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस प्रगति में हिंदी भी चल रही है। कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य और भाषा को नए रूप नए सिरे से प्रस्तुत कर रही है । ध्वनि प्रसंस्करण के कारण पाठ से वाक् और वाक् से पाठ का नवाचार उपलब्ध हो रहा है । एडीवी स्कैन, गूगल लेंस माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, गूगल ट्रांसलेट आदि ऐसे ऐप है जो हिंदी दस्तावेज को स्कैन करके उसको संगणक टंकण के रूप में प्रस्तुत करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। इतना ही नहीं तो वह हिंदी भाषा को अन्य भाषाओं में भी अनुवादित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। साथ ही अन्य भाषाओं का साहित्य हिंदी भाषा में अनुवादित कर रहे हैं। कोरटना, गूगल असिस्टेंट जैसे एप्स की सहायता से हिंदी में संवाद करने, जानकारी खोजने, या अनुवाद करने में योगदान दे रहे है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संबंधित गूगल, जेमीनी, चैटजीपीटी,डीपसीक क्लॉड पेरप्लेक्सीटी,गुगल,विंग युकाम, एलेक्सा आदि ऐप्स है जो प्रति लेखन, संवादो द्वारा जवाब, अनुवाद अन्य जानकारी देने में सहायता करते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हिंदी भाषा या साहित्य से संबंधित जानकारी देने एवं हिंदी साहित्य के संबंध में भविष्य में आने वाली समस्याओं को हल करने में सक्षम साबित हो रहे हैं। आज चैट जीपीटी के माध्यम से हिंदी कहानी, कविता, उपन्यास,नाटक निबंध तथा शोध निबंध लेख आदि का प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण के माध्यम से मानवीय बौद्धिक भाषा की तरह साधन या साहित्य उपलब्ध कर रहे हैं। परिणामस्वरुप हिंदी भाषा के लिए नवीनतम रास्ते खुल रहे हैं ।जो उसके अस्तित्व को विशाल विश्व पटल पर सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इस संबंध में श्री बालेंद्र वर्मा दाधीच कहते हैं "यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी। अगर हम हिंदी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते तो हमें कृत्रिम मेघा को खुले दिल से अपनाना चाहिए। वजह यह है कि यह प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच दूरियां समाप्त करने में सक्षम है। आज हम अंग्रेजी प्रधानता से त्रस्त है और कृत्रिम मेघा तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकीयां अंग्रेजी के दबदबे से मुक्त होने में हमारी मदद कर सकती है।"[3] अर्थात कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से हम हिंदी का विकास और विस्तार करके हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच देंगे | साथ ही अंग्रेजी के महत्व को भी काम कर सकेंगे। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता साहित्य निर्माण में सहयोग दे रही है। साथ में लेखकों द्वारा निर्माण सामग्री के व्याकरण और वर्तनी सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आज लैंग्वेज टूल्स (language tools)तथा इंडिक, एन.पी.एल.पी. टूलकिट्स आदि टूल्स रचनाकारों की व्याकरणिक गलतियां खोजकर उसमें सुधार करने वाला व्याकरण परीक्षित का काम करते दिखाई दे रहे हैं। जो रचना करो की भाषा सुधार का काम कर रहे हैं। गूगल डिक्टेशन, स्पीच नोट्स, माइक्रोसॉफ्ट, डिकेट्स आदि टूल्स है। जो हम हिंदी में जो कुछ बोलते हैं वह सुनकर उसका टैक्स याने लिखित सामग्री रुप हमारे सामने प्रस्तुत करता है। भाषा सीखने की प्रक्रिया को आई या कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक ने बहुत ही सरल बना दिया है। नए एप्लीकेशन या डिजिटल प्लेटफॉर्म ने छात्रों ,लेखकों, संशोधकों को भाषा का अध्ययन को सुलभ बना दिया है। हिंदी भाषा का अनुवाद करके हिंदी साहित्य की सामग्री विश्व की अनेक भाषाओं तथा विश्व भर में भर के महत्वपूर्ण रचनाएं हिंदी भाषा में आसानी से रूपांतरित हो रही है । हिंदी भाषा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने किया यह उल्लेखनीय कार्य है ।संचार कार्य सरल बना रहा है ।एआई टूल्स द्वारा हो रहे अनुवाद में भले ही भावात्मक स्तर पर कुछ कठिनाइयां निर्माण हो रही है यह कठिनाइयां कम करने के

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

प्रयास एआई टीम द्वारा चल रहे हैं। इस संबंध में श्री बालेंद्र वर्मा दाधीच कहते हैं, "कुछ वर्षों के भीतर हम ऐसे मशीन अनुवाद की स्थिति में पहुंच सकते हैं जो मानवीय अनुवाद को ही टक्कर का होगा।" स्पष्ट है कि आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जरिए हिंदी भाषा के विकास में योगदान होगा।

साहित्य समाज का दर्पण है | साहित्य से तात्पर्य मनुष्य के मन के भाव-भावनाओं, विचारों, अनुभव की वह सृजनात्मक या कलात्मक अभिव्यक्ति है। जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों के साथ सामाज हित भावना गद्य और पद्य के रूप में दृष्टिगोचर होती है। हिंदी साहित्य भी इसके लिए अपवाद नहीं है। हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग बढ़ रहा है। इस नई तकनीक के द्वारा किसी भी साहित्यकार के बारे में जानकारी इकट्ठी करना संभव हो गया है।आज चॅटजीपीटी तथा अन्य जेनरेटिव ए आई टूल्स की सहायता से कहानी, निबंध,नाटक तथा कविता का निर्माण करना आसान हो गया है। विषय के अनुसार उपरोक्त टूल्स रचनाएं आसानी से उपलब्ध करा रहे हैं। समृद्ध शब्दावली एवं शैलीगत प्रयोग के परिणाम स्वरुप साहित्य के सृजन में नवीनता और विविधता आ गई है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने साहित्य पाठकों के परंपरागत विश्लेषण पद्धति को डिजिटल तकनीक पाठ विश्लेषण तक ले गई है। परिणाम स्वरूप साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन संभव हो रहा है। जिससे दो कृतियों के शब्द, आवृत्ति, शैली, विषय तथा तत्व का तुलनात्मक अध्ययन करना संभव हो गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से साहित्य के विभिन्न विधाओं का लेखन हो रहा है। मगर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सृजन से निर्मित साहित्य में संवेदना, मनुष्य की अनुभूतियों तथा अनुभव की गहराई का अभाव देखने को मिलता है। किंतु साहित्य सर्जन के क्षेत्र में इस नई प्रौद्योगिकी ने एक क्रांतिकारी पहल की है। जिसने हमें साहित्य के सूक्ष्म अर्थ खोजने से लेकर हजारों ग्रन्थों का एक साथ सांख्यिकी विश्लेषण की तकनीक से रूबरू कराया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के द्वारा डिस्टेंट रीडिंग के माध्यम से भारतेंदु युग के कवियों द्वारा प्रयुक्त प्रतिक और द्विवेदी युग के कवियों द्वारा प्रयुक्त प्रतिक के बीच के अंतर को कुछ ही सुनो में हमारे सामने प्रस्तुत करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता या ए. आई. के माध्यम से अनुवाद करना आसान हो रहा है। जिससे हिंदी साहित्य का भारत सहित विश्व की अन्य भाषाओं के साथ अनुवाद हो रहा है तथा विश्व की भाषा में हिंदी का हो रहा अनुवाद हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहा है। जिससे हिंदी साहित्य को विश्व पटल मिल रहा है। आज ए.आई.टूल्स की तकनीकी सहायता से हिंदी साहित्य ब्रॉडकास्ट तथा ऑडियो के रूप में अनेक श्रोताओं तथा पाठकों तक पहुंच रहा है।

हिंदी साहित्य के निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता अपनी अहम भूमिका निभा रही है।कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विभिन्न टूल्स का उपयोग करके हिंदी साहित्य में कविताओं का निर्माण किया जा रहा है। चैटजीपीटी जैसी टूल्स को किसी विशिष्ट विषय पर कविता करने के लिए सूचना दी जाए तो वह कुछ दिनों में हिंदी में दी गई सूचना के अनुसार का कविता तैयार करता है। उसी प्रकार नाटक की संदर्भ में भी ए.आई का उपयोग करके विभिन्न प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किया जा रहे हैं। उदाहरण के रूप में देख ले तो सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के लड़ाई नाटक में चित्रित समस्याओं को प्रकट करने में की मदद ले तो यह हमें जवाब देगा की "यह नाटक समाज में व्याप्त दुराचार, राशन, दफ्तर व अन्य जगहों पर फैले भ्रष्टाचार, बच्चों के लिए मातृभाषा की शिक्षा तथा शक्ति के लिए संघर्ष करने की समस्या को उठना है।"[5] इतना ही नहीं तो उपन्यास आलोचना के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता अपनी अहम भूमिका बजा रही है।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

निष्कर्ष:

आज सूचना प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी क्रांति के कृत्रिम बुद्धिमत्ता Artificial intelligence (AI)ने समाज के हर क्षेत्र पर अपनी साख बना ली है। कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य और भाषा को नए रूप नए सिरे से प्रस्तुत कर रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संबंधित ऐप्स है जो प्रति लेखन, संवादो द्वारा जवाब, अनुवाद अन्य जानकारी देने में सहायता करते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता AI के माध्यम से आज चैट जीपीटी के माध्यम से हिंदी कहानी, कविता, उपन्यास,नाटक निबंध तथा शोध निबंध लेख आदि का प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण के माध्यम से मानवीय बौद्धिक भाषा की तरह साधन या साहित्य उपलब्ध कर रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से हिंदी साहित्य का भारत सहित विश्व की अन्य भाषाओं के साथ अनुवाद हो रहा है तथा विश्व की भाषा में का हिंदी में हो रहा अनुवाद हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहा है। जिससे हिंदी साहित्य को विश्व पटल मिल रहा है।

संदर्भ:

1. https://sahityakunj.net//entries/view/hindi-ke-vikas-mein-kritrim-buddhi-ka-yogdaan (फरवरी 2026)
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Artificial_intelligence 04 फरवरी 2026
3. बालेन्द्र शर्मा दाधीच , हिंदी विमर्श की मुख्य धारा में कृत्रिम बुद्धिमता ,साहित्य परिक्रमा, जुलाई 2023 पृष्ठ 20 वही पृष्ठ 20
4. https://www.google.com/search